REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

वाचन कौशल्य - संकल्पना, महत्व और प्रवृत्तियाँ

डॉ. धीरज परमार
सहप्राध्यापक , आणंद एज्युकेशन कोलेज, आणंद .

सारांश

सुनना, बोलना, वाचन करना और लिखना ये भाषाके मूल कौशल्य है । इस चार कौशल्य के विकास से मनुष्य हर कोई क्षेत्रमें सफलता हांसिल करता है । आज शिक्षाकी प्रसार और प्रचार हो रही है इस माहोलमें पठन कौशल्य बहुत अवश्यक है । पढना एक कला है । इस कौशल्यमें छात्र अपने प्रयत्नोसे बहुत कुछ सीख सकता है । स्कूल और शिक्षकका उत्तदायित्व ये है कि छात्रो को पठन के लिए उत्प्रेरित करे और पठनके लिए छात्रोमें रस जगाये । इस शोधपत्रमें पठनकी संकल्पना, महत्व, उद्देश्य और विकास के लिए प्रवृत्तिके बारे में चजर्चा की गई है ।

प्रस्तावना

आजकल शिक्षाका प्रसार हो रहा है । शिक्षाके लिए बहुत सारी योजना भी चल रही है । दिनप्रतिदिन स्कूलमें बच्चोका नामांकन बढता जा रहा है । लेकिन स्कूलमे दाखिल हुई बच्चोमें से कई सारे बच्चे अच्छी तरहसे पठन नही कर सकता । कभी कभी बच्चे स्कूल त्यागभी करते है । स्कूल मे दाखिल हुआ एक-एक बच्चा अच्छी तरहसे पठन कर सके ये बहुत आवश्यक है ।

पठन के दो प्रकार है । (१) मुखवाचन (Oral Reading) (२) शांतवाचन (Silent Reading) मुखवाचन दो तरीके से होता है । (१) वैयक्तिक (२) सामूहिक

बच्चा लेखित और मुद्रित लिपि संकेतोको पहचानता है तबसे वो वाचन करनेकी शुरुआत करता है । शब्द को पहचानना, प्रकट करना और अर्थ को समजनेकी प्रक्रिया को वाचन/पठन कहते है । लिखे हुए शब्दो को देखना ये शारीरिक प्रक्रिया है लेकिन लिखे हुए शब्द के अर्थ समजना ये मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है । अनपढ आदमी लिखा हुआ देखते है लेकिन उसको समज नहीं पाता ।

वाचनका भाषाके दृश्य स्वरुप के साथ संबंध है । वाचन अर्थग्रहणात्मक कौशल है । जब हम वाचन करते है तब आगे क्या होगा उसकी कल्पना कर सकते है ।

वाचन कौशल्यमें पढाई की गति बहुत आवश्यक है । तेज गतिसे वाचन करनेवाला ज्यादा अर्थग्रहण करत सकता है । वाचन कौशल्यका मुख्य उदेश्य लेखक की सोच समज और जजबात को जानना और समझना । इसके अलावा ज्ञानप्राप्ति और आनंदकी अनुभूति करना ये भी वाचन कौशल्य का बहुत बडा महत्व है । इक्कीसवी सदीमे माहिती, संदेश, मनोरंजन, ज्ञान के क्षेत्र में वाचन का बडा प्रभाव है । वाचन के बिना हे शिक्षाकी कल्पना भी नहीं कर सकते । छात्रो के लिए वाचन अत्यंत आवश्यक है । जो छात्र गहराईसे विस्तृत वाचन

करता है, समजके साथे वाचन करता है उसका भविष्य उज्जवल होता है । पत्रकार, शिक्षक, वकालत जैसे व्यवसायोकी सफलता का आधार वाचन है । साहित्य का आनंद वाचन से मिलता है । हमारे व्यक्तित्वमे भी बदलाव वाचनसे आता है । वाचनसे हमारा जीवन हराभरा बनता है ।

★ स्कूल कक्षा मे वाचन विकास की प्रवृतियाँ

वाचन से छात्रका मानसिक विकास होता है । अच्छी तरहसे पठन के लिए ज्यादा

प्रेक्टिस की जरुरत है । शिक्षकका आदर्शवाचन छात्रोके लिए चालकबल है । स्कूल कक्षामें वाचन के लिए छात्रो को वाचन प्रवृत्तिमें हिस्सेदार बनाया जाय, छात्रो को मार्गदर्शन दिया जाय, ये बहुत महत्वपूर्ण बात है । स्कूलमें वाचन कौशल्य के लिए निम्नलिखित प्रवत्तियाँ करनी चाहिए ।

- प्रार्थनासभा में नियमितरुपसे अच्छे अच्छे विचार का वाचन ।
- प्रार्थनासभा में देशविदेशके समाचार का वाचन ।
- कहानी का वाचन करना ।
- महापुरुषके जीवन अंशोका वाचन करना ।
- काव्य पठन करना ।
- स्कूल मे आयोजित विविध कार्यक्रमो के रीपोर्टका वाचन करना ।
- स्कूल में छात्रो के लिए अच्छे नाटक के संवादका वाचन करना ।
- स्कूल को प्राप्त हुए संदेशका वाचन करना ।
- कठिन शब्दो का वाचन करने के लिए छात्रो को तैयार करना ।
- वर्ग पुस्तकालय से वाचन के लिए पुस्तक की व्यवस्था करना ।
- सप्ताहमें एक दिन समूहवाचन की व्यवस्था करना ।
- वाचन कौशल्य विकासके लिए बुलेटिन बोर्ड बनाकर रखना ।
- वर्तमानपत्र में प्रकाशित आर्टिकलको बुलेटिन बोर्ड पर रखना ।
- स्कूल पुस्तकालयसे मा-बाप को भी पुस्तक मिले एसी व्यवस्था करना ।
- छात्रो की उम्र, कक्षा, रुचि को ध्यानमें रखकर वाचन सामग्री की व्यवस्था करना।
- छुट्टीओके वक्तमें वाचन शिविरका आयोजन करना ।
- अच्छी तरह से वाचन करने वाले छात्र-छात्राका अभिवादन करना ।
- वाचन के बाद पुस्तक समीक्षा का आयोजन करना ।
- बच्चो के लिए वर्तमानपत्रमें प्रकाशित विशेष पूर्ति का पठन करवाना ।
- स्कूलमे वाचन सुधार कार्यक्रम का आयोजन करना ।

उपसंहार :-

वाचनकी आदत हमारे लिए बहुत बडी सिद्धि है । वाचन से मानवजीवन उपर उठता है । ज्ञान और संस्कारके दरवाजे खुलते है । वाचन कौशल्य के विकास से स्वस्थ समाजकी निर्माणकी संभावना ओर बढ जाती है ।

★ संदर्भसूची

- पटेल मोतीभाई (२००४) मातृभाषा अध्यापनका परिशीलन, बी.एस. शाह प्रकाशन, अहमदाबाद ।
- आक्रुवाला सी.के. (१९७०) मातृभाषा अभिनव अध्यायन, बी.एस.शाह प्रकाशन, अहमदाबाद ।
- त्रिवेदी रमणलाल (१९५५) मातृभाषाका अध्यापन, रवानी प्रकाशन, अहमदाबाद ।
- जोषी कनैयालाल (१९७२) गुजराती - अध्यापन के सांप्रत प्रवाह बालगोविंद प्रकाशन अहमदाबाद ।